IJAER/ Oct-Nov 2012 /Volume-1/Issue-3/Article No-25/ 318-321 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

व्यावसायिक शिक्षा के प्रति लड़कियों के अभिभावकों का दृष्टिकोण

अलका कुमारी
शोधार्थिनी
सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय,
शिलांग, मेघालय

डॉ0 कुलदीप कुमार
शोध निर्देशिक
सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय,
शिलांग, मेघालय

व्यक्ति के व्यवहार में वाँछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ है कि उनका वर्णन करना कठिन है। शिक्षा माता के समान पालन पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्गदर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिंताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है, शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। हम देश मे रहें या विदेश मे प्रत्येक स्थान पर शिक्षा हमारी सहायता करती है। इस प्रकार कल्पलता की भांति शिक्षा हमारे लिए क्या–क्या नही करती, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्य अस्त होने पर कुम्हला जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भांति खिल उठता है तथा अशिक्षित होने पर दरिद्रता, शोक एवम् कष्ट के अधंकार में डूबा रहता ह। संक्षेप मे शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा व्यक्तियो की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है इससे वह समाज का उत्तरदायी घटक एवम् राष्ट्र का प्रखर चरित्र–सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति और सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुनः स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

आज समाज तीव्र गति से बदल रहा है। स्वतन्त्रता से पहले यह देश उन्नति की दौड़ में अन्य देशों से पीछे ही रहा परन्तु अब परिस्थितियाँ बदल गइ हैं। विभिन्न धर्मों में सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, जाति–भेद की दीवारें टूटी हैं, नारियो को पुरूषों के समान अधिकार मिल रहे हैं, आदिवासी जातियाँ भी अब सभ्यता के मार्ग पर आ गयी हैं। पहले स्त्रियों को केवल भोग–विलास की वस्तु समझकर घर की चारदीवारी में बन्द करके रखा जाता था परन्तु आज की नारी घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर पुरूष के समान ही उन्नति और आत्मनिर्भरता के पथ पर अग्रसरित हो गयी है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सामाजिक विज्ञान शिक्षण में शिक्षक की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। विविध आयाम वाले इस विषय की विषयवस्तु का क्षेत्र अन्य विषयों की तुलना में अधिक विस्तृत है। शिक्षक को ही इस बात का निर्णय करना पड़ता है कि कौन से सामाजिक विज्ञान की कौन सी विषय वस्तु शिक्षार्थी के लिए उपयोगी है तथा किस विषय की कौन सी विषयवस्तु शिक्षार्थी को किस सीमा तक किस पद्धति से पढ़ाने की आवश्यकता है। इस विषय के अध्यापक का पूरे पाठ्यक्रम पर अपना पूर्ण अधिकार नहीं होता। अतः कई अंश पढ़कर पढ़ाने की आवश्यकता बनी रहती है। विद्यार्थी को अपने कर्त्तव्य एवं अधिकार तथा सामाजिक एवं आथिक व्यवस्थापन की शिक्षा इसी विषय के अध्ययन से मिलती है। आदर्श शिक्षक ही अपने शिक्षार्थियों में आदर्श चरित्र, कर्त्तव्य परायणता, राष्ट्रप्रेम एवं आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थापन जैसे गुणों का विकास करने में सफल हो सकता है। इसी समय शिक्षार्थियों में सामाजिक चेतना, सहृदयता, सहानुभूति, सहिष्णुता और समाज जैसे गुणों का उदय होता है, इसलिए शिक्षार्थियों को प्रत्येक कदम पर मार्ग दर्शन देने एवं आदर्श प्रस्तुत कर सकने की आवश्यकता बनी रहती है। इस प्रकार शिक्षक को पर्याप्त सतर्क रहने की आवश्यकता बनी रहती है। सामाजिक अध्ययन के अध्यापक के लिए पाठ्य पुस्तकों का भी महत्व है। पाठ्य पुस्तकें संस्कृति एवं परम्पराओं में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण साधन का कार्य करती हैं। यद्यपि यह पुस्तकें माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा राष्ट्रीयकृत पाठ्य–पुस्तक मण्डल एवं कुछ लेखक व्यक्तिगत रूप से भी लिखते हैं, प्रकाशित कराई जाती हैं। शिक्षक एवं अधिकारी वर्ग को विद्यालय के लिए पुस्तकों का चयन करते समय सतर्कता बरतनी चाहिए।

शिक्षा का महत्व स्त्री और पुरूष दोनों के ही लिए अनेक दृष्टियों से है। इसका कार्यक्षेत्र इतना व्यापक है कि इसके अन्तर्गत वे सभी कार्यक्षेत्र आ जाते हैं जिनका पूरा करने से व्यक्ति अपने जीवन को सुखी तथा सफल बनाते हुए

सामाजिक कार्यों को उचित समय पर पूरा करने के योग्य बन जाता है। सामान्य रूप से शिक्षा व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का नियन्त्रण मार्गान्तीकरण तथा शोधन करते हुए उसकी जन्मजात शक्तियों के विकास में इस प्रकार सहायता प्रदान करती है कि उसका सर्वांगीण विकास हो जाये। यही नहीं, शिक्षा व्यक्ति में चरित्रिक तथा नैतिक गुणों एवम् सामाजिक भावनाओं को विकसित करके उसे प्रौढ़ जीवन के लिए इस प्रकार तैयार करती है कि वह अपनी संस्कृति व सभ्यता का संरक्षण करते हुए उत्तम नागरिक क रूप में सामाजिक सुधार करके राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति देने में तनिक भी नहीं हिचकिचाता संक्षिप्त रूप में शिक्षा मानवीय जीवन में व्यक्ति को जहाँ एक ओर वातावरण से अनुकूलन करने तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुये भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करते हुए चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर तथा साहसी उत्तम नागरिक के रूप में आत्म निर्भर बनाकर उसका सर्वांगीण विकास करती है। वही दूसरी ओर शिक्षा राष्ट्रीय जीवन में व्यक्ति के अन्दर राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता, सामाजिक कुशलता तथा राष्ट्रीय अनुशासन आदि भावनाओं को विकसित करके उसे इस योग्य बना देती है कि वह सामाजिक कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने के लिए ओत–प्रोत हो जाता हैं। संक्षेप में शिक्षा सामान्य तथा राष्ट्रीय जीवन में इतने कार्य करती है जिससे व्यक्ति तथा समाज निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढ़ते रहते हैं। परिवार के स्वस्थ विकास के लिए स्त्री और पुरूष दोनों का ही शिक्षित होना आवश्यक है। स्त्री शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए मुदालियर कमीशन ने लिखा है–**'एक पुरूष को शिक्षित करना केवल एक ही पुरूष को शिक्षित करना है जबकि एक महिला को शिक्षा देना पूरे परिवार को शिक्षा देने के बराबर होता है'** अतः शिक्षा, स्त्री और पुरूष को एक आदर्श मानव, एक आदर्श नागरिक बनाती है तथा उनके व्यक्तित्व का विकास करती है।

प्रस्तुत समस्या के अन्तर्गत लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण के उद्देश्य द्वारा यह ज्ञात करना है कि वर्तमान में अभिभावक अपनी लड़कियों को किस स्तर तक शिक्षा देने के पक्ष में हैं और वे अपनी लड़कियों का सेवारत रहना पसन्द करते हैं अथवा नहीं। भारतीय समाज में मूलतः इसके पुरूष प्रधान होने के कारण असमानताएँ निरन्तर उपस्थित हैं। अनेक कानून बनने के बाद भी स्त्रियों के प्रति दुर्व्यवहार की घटनाएँ होती रहती हैं। यद्यपि दहेज लेना व देना अपराध है परन्तु दैनन्दिन अनेक लड़कियाँ आज भी इसका शिकार बनती हैं। इसी प्रकार बलात्कार, सेवारत लड़कियों अथवा स्त्रियों का यौन उत्पीड़न आदि मामले बराबर सामने आते रहते हैं। इस प्रकार अनेकों कारणवश कुछ अभिभावक अपनी लड़कियों को शहर से दूर भेजनें अथवा उन्हें व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में नहीं होते। इसी प्रकार मुस्लिम समुदाय में आज भी पर्दा प्रथा है यदि कुछ शहरी क्षेत्रों को छोड़ दिया जाए तो गामीण क्षेत्रों में आज भी धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति के फलस्वरूप मुस्लिम समुदाय अपनी लड़कियों को व्यावसायिक शिक्षा देने से हिचकिचाते हैं फलतः उनका दृष्टिकोण भी भिन्न होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में यही जानने का प्रयास किया गया कि :–

- हिन्दू शहरी अभिभावकों का अपनी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है?
- हिन्दू ग्रामीण इस सम्बन्ध में क्या सोचते हैं?
- मुस्लिम शहरी अभिभावकों का अपनी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है?
- मुस्लिम ग्रामीण अभिभावकों का इस सम्बन्ध म क्या दृष्टिकोण है?

प्रस्तुत समस्या 'लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण' हेतु शून्य परिकल्पना का प्रयोग करते हुए माना गया है कि :–

न्यादर्श

- मेरठ जिले के हिन्दू और मुस्लिम परिवारों को ही सम्मिलित किया गया है।
- 150 ग्रामीण एवं शहरो मुस्लिम एवं हिन्दू परिवारों को ही लिया गया है।

1. हिन्दू और मुस्लिम अभिभावकों के अपनी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. मुस्लिम शहरी और मुस्लिम ग्रामीण अभिभावकों के अपनी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. हिन्दू शहरी व मुस्लिम शहरी अभिभावकों का अपनी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के तथ्य–संकलन हेतु लिंकर्ट मापनी प्रविधि का प्रयोग किया गया। जिसके अन्तर्गत बालिकाओं की शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण, सहशिक्षा एवं लड़कियों की स्वतन्त्रता सेवारत लड़कियों या स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण, लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा का प्रभाव, व्यावसायिक शिक्षा के मार्ग में कठिनाईयों प्रत्येक प्रकार के शीर्षक में पाँच–पाँच प्रश्न सम्मिलित किये गए हैं, इस प्रकार कुल प्रश्नों की संख्या 25 है।

	हिन्दू अभिभावक	मुस्लिम अभिभावक	स्तर	तालिका से प्राप्त टी का मान	गणना से प्राप्त टी का मान	परिणाम
मध्यमान	88.97	81.71	0.05	1.97	7.73	सार्थक
एस0डी0	8.07	4.70	0.01	2.6	7.73	सार्थक
एन	100	100				

	हिन्दू शहरी	मुस्लिम ग्रामीण	स्तर	तालिका से प्राप्त टी का मान	गणना से प्राप्त टी का मान	परिणाम
मध्यमान	86.98	78.46	0.05	1.98	2.51	सार्थक
एस0डी0	17.00	16.90	0.01	2.63	2.51	असार्थक
एन	50	50				

	मुस्लिम शहरी	मुस्लिम ग्रामीण	स्तर	तालिका से प्राप्त टो का मान	गणना से प्राप्त टी का मान	परिणाम
मध्यमान	74.06	68.58	0.05	1.98	1.36	असार्थक
एस0डी0	22.5	17.6	0.01	2.63	1.36	असार्थक
एन	50	50				

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मुस्लिम शहरी अभिभावक लड़कियों के लिए उनके व्यक्तित्व के विकास हेतु सहशिक्षा भी आवश्यक मानते है। इन अभिभावकों के अनुसार लड़कियों को अपनी रूचि के अनुसार किसी भी व्यवसाय को अपना लेना चाहिये तथा व्यावसायिक स्तर पर लड़कियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेना चाहिए। इनके अनुसार लड़कियों का सेवारत रहना सम्मान का विषय है लगभग सभी अभिभावक पूर्णतः सहमत हैं कि लड़के व लड़कियों के पाठ्यक्रम पृथक होने चाहिये। अधिकांश अभिभावक इस बात के लिये अनिश्चितता प्रकट करते हैं कि व्यावसायिक शिक्षा दहेज प्रथा की समाप्ति में सहायक होती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लड़कियों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती हैं, उनमें फैशन भी बढ़ता है।

मुस्लिम ग्रामीण अभिभावक लड़कियों की अनिवार्य शिक्षा हेतु पूर्णतः समहत है परन्तु उन्हें व्यावसायिक शिक्षा दिलाने हेतु क्षेत्र से बाहर भेजे जाने की सहमति व्यक्त नहीं करते। कुछ अभिभावकों का मत है कि व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लड़कियों में अनैतिकता का विकास होता है। व्यावसायिक शिक्षा खर्चीली होती है तथा सुरक्षा की दृष्टि से भी व्यावसायिक शिक्षा उचित नहीं है। इन अभिभावकों के अनुसार लड़कियों को धार्मिक शिक्षा, घरेलू काम काज की शिक्षा दी जानी चाहिये। सह शिक्षा पर लगभग सभी अभिभावक असहमति व्यक्त करते हैं। लड़कियों को खुली स्वतन्त्रता नहीं देनी चाहिए सहशिक्षा से उनमें अनैतिकता का विकास होता है।

सुझाव

- लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित किया जाना चाहिये। ये उद्देश्य लड़कियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास और परिवार की आर्थिक स्तर को सुधारने की दृष्टि से निर्धारित किये जाने चाहिये।
- लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा में सुधार लाने हेतु पाठ्यक्रम का पुनर्संगठन आवश्यक है इस पाठ्यक्रम में कम्प्यूटर शिक्षा, फैशन डिजाइनिंग, अर्थशास्त्र, गृहविज्ञान, शिक्षा आदि समावेश की सम्भावना है।
- केन्द्रीय सरकार व राज्य की सरकारों को व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लड़कियों के लिये रोजगार के अधिक से अधिक अवसर जुटाने चाहिये।
- व्यावसायिक शिक्षा संस्थाओं के अभाव में बहुत से अभिभावक इच्छा रखते हुए भी उन्हें व्यावसायिक शिक्षा नहीं दिला पाते। अतः लड़कियों क लिए अलग से प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा संस्थायें खोली जायें।
- ग्रामीण क्षेत्रों में मुसलमानों की स्थिति आज भी दयनीय बनी हुई है, अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों के मुसलमान निर्धनता, बेरोजगारी तथा अशिक्षा से घिरे हुये हैं। शिक्षा की कमी निर्धनता, बेरोजगारी तथा बेकारी आदि के कारण ही अनेकों सामाजिक कुरीतियाँ जन्म लेती हैं। अतः भारत सरकार को इनके शैक्षिक व आर्थिक विकास हेतु हर सम्भव प्रयास करना चाहिये तभी देश उन्नति के मार्ग पर अग्रसरित हो सकेगा।
- व्यावसायिक स्तर पर शिक्षा बहुत खर्चीली होती ह। अधिकतर जितने भी प्राईवेट संस्थान हैं वहाँ शुल्क इतना अधिक होता है कि निर्धन अभिभावकों के लिए खर्चा बर्दाश्त करना अत्याधिक कठिन होता है तथा जिन संस्थाओं का शुल्क कम होता है वहाँ शिक्षा का स्तर अच्छा नहीं होता। अतः प्रत्येक ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र म निःशुल्क सरकारी व्यावसायिक संस्थान खोले जाने चाहिये।
- आजकल बालक बालिकाओं के पाठ्यक्रम में समानता के कारण समाज में बड़ा असंतोष है। यह प्रायः सैद्धान्तिक, पुस्तक प्रधान तथा अव्यावहारिक है और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता। उसमें उनकी रूचि की अवहेलना होती है। पाठ्यक्रम प्रायः बोझिल हैं। अतः इसमें लिंग भेद के आधार पर अन्तर आवश्यक है। कुशल लड़कियों का निर्माण पाठ्यक्रम का उद्देश्य होना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 ए0 पी0 शर्मा : भारतीय शिक्षा की समस्याएँ, अशोक पब्लिशिंग हाऊस, 83, गांधीनगर, मेरठ
2. डॉ0 आर0ए0 शर्मा : शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकी, आई0 पी0 एच0,मेरठ
3. ऑल इण्डिया बोमन कांफ्रेंस : वोमन एण्ड सोशल इन जस्टिस, नव जीवन प्रेस, अहमदाबाद
4. बुच एम0 वी0 (एडी) : थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0 (1987)
5. बुच एम0 वी0 (एडी) : फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0 (1991)
6. बुच एम0 वी0 (एडी) : फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0 (1995)